

Religion

धर्म

You know, one of the strange things of life is what we call religion. You may have wealth, success; you may be very famous, well-known, or you may have failures, sorrows, a great many frustrations, but at the end of it all, death awaits all of us. Whether we live to be 100 or 10 or whatever it is, there is always death. Seeing all this, seeing our own littleness and sorrows, we want to find something beyond ourselves. Because, after all, one very soon gets tired of one, of one's success, one's vanities, the things that one does, of the family, the money, the position. When people get tired of these things, they feel they have been deceived. Then, in order to forget themselves, they try to identify themselves with something greater. That is, they like to think that there is something greater, and they say, 'Perhaps if I could think about that, live in that, meditate upon that, have an image, a picture, an idol of that, then I could forget myself in it.'

When man tries to go beyond himself, beyond his struggles, beyond his sorrows, beyond all the things that perish round him, beyond all the things that live and die, he begins to search, to invent, to speculate. Actually, he does not really search, he does not really want to find out, but he hopes there is something which he calls God, and he clings to the belief in that which his own mind has created, thus trying to escape from all these troubles. So he begins to speculate, he begins to have theories of what God is, he writes books about it. The more clever, the more cunning, the more subtle you are, the more

आप जानते हैं जिंदगी की अजूबा बातों में से एक वह है जिसे धर्म कहा जाता है। हो सकता है आपके पास धन हो, सफलता हो, हो सकता है आप बहुत विख्यात हों या शायद आपको अनेक असफलताएं, दुख और डेर सारी कुंठाएं-निराशाएं झेलनी पड़ी हों, किंतु इन सबके अंत में मृत्यु तो हमारी प्रतीक्षा कर ही रही होती है। हम सौ साल, दस साल या जितने भी साल जिएं मृत्यु तो एक दिन आनी ही है। यह सब देख कर, अपनी नगण्यता और अपने दुखों को देखते हुए हममें अपने से परे कुछ पाने की इच्छा जागने लगती है। क्योंकि व्यक्ति अंततः अपने आपसे, अपनी सफलता से, अपने आडंबरों से, वह जो कुछ भी करता है उस सबसे, परिवार, धन और पद-प्रतिष्ठा आदि से ऊब जाता है। जब लोग इस सबसे उकता जाते हैं तो उन्हें ऐसा महसूस होने लगता है मानो वे अब तक बस धोखा खाते रहे हैं। फिर अपने आपको भूलने के लिए वे किसी बड़ी चीज़ से अपना तादात्म्य करने का प्रयत्न करते हैं। यानी वे किसी बड़ी चीज़ का विचार करने लगते हैं और कहते हैं, 'शायद अगर मैं उसके विषय में सोच सकूं, उसे जी सकूं, उसकी प्रतिमा, चित्र या मूर्ति पर ध्यान लगा सकूं, तो मैं उसमें अपने को पूरी तरह भुला सकूंगा'।

जब मनुष्य स्वयं से, अपने संघर्षों से, दुखों से, अपने आस-पास की सभी नश्वर वस्तुओं से, उन सभी चीज़ों से परे चला जाना चाहता है जो जीती और मरती हैं तो वह कुछ खोजने लगता है, वह कल्पनाएं और पूर्वानुमान करने लगता है। वह सच्चे अर्थ में खोज नहीं करता, वह वस्तुतः पता लगाना नहीं चाहता बल्कि इन सारी परेशानियों से पलायन करने का प्रयत्न करता है और वह आशा करता है कि कहीं कोई ऐसी चीज़ है, जिसे वह ईश्वर कहता है और इस प्रकार की आस्था में बंध जाता है जो वस्तुतः उसके मन की ही उपज होती है। इस प्रकार वह तरह-तरह की अटकलें लगाने लगता है और ईश्वर क्या है इस बारे में भांति-भांति के सिद्धांत गढ़ लेता है और इस बारे में पुस्तकें लिखता है। आप जितने अधिक चतुर होंगे, जितने बुद्धिमान होंगे, सूक्ष्म चिंतन के जितने काबिल होंगे, ईश्वर के

ideas you have about God, and around that you will build a great many philosophies, systems of thought. From that grows the thought that you must have beliefs in order to attain reality, you must do certain practices, you must give up the world, you must do this, and you must not do that in order to get there, in order to forget the troubles, the sorrows, and the death that await all of us. So, we have a religion which demands that we shall believe. Society demands likewise. Because that is what each one of us wants—to believe in something much greater than ourselves, since we ourselves are very small.

All our conflicts, all our ambitions, are very small, very petty. So, we want to identify ourselves with something. If it is not God, it is the state—the state being the whole of India or the whole world—the government, the people who rule, the society. If it is not that, it is utopia, something very far away, a marvellous society that we are going to build; in the building of it you destroy many people, but that does not really matter to you. If you do not believe in any of these, you believe in having a good time and forget yourself in material things. Such a person is called materialistic, and the man who forgets himself in the spiritual world is called spiritual. Both of them have the same intention—one to forget himself in cinemas and the other in books, in rituals, in sitting on the banks of the river meditating, in renunciation—not to have any burden, to lose oneself in some kind of action, to lose oneself in the worship of something.

So, there is the desire to lose oneself because one feels very

संबंध में उतनी ही अधिक धारणाएं आपमें होंगी और उन्हें आधार बनाकर आप अनेक महान दार्शनिक सिद्धांत तथा विचार प्रणालियां निर्मित कर लेंगे। इसके फलस्वरूप आपमें यह विचार उत्पन्न होगा कि यथार्थ की प्राप्ति के लिए आस्था-विश्वास आवश्यक है, विशिष्ट साधना आदि करना ज़रूरी है, संसार का त्याग ज़रूरी है, वहां तक पहुंचने के लिए आपको कुछ कर्म करने होंगे और कुछ को तिलांजलि देनी होगी, ताकि आप अपने कष्टों को भुला सकें, दुखों को और उस मृत्यु को भी भुला सकें जो हम सभी की प्रतीक्षा करती रहती है। इस प्रकार एक धर्म पैदा होता है जो हमसे विश्वास रखने की मांग करता है। समाज भी हमसे ऐसी ही मांग करता है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति ही यह चाहता है कि अपने से किसी बहुत बड़ी चीज़ पर हम विश्वास करें, क्योंकि अपने आप में हम बहुत छोटे हैं।

हमारे सारे अंतर्द्वंद्व, हमारी सारी महत्वाकांक्षाएं अत्यंत क्षुद्र होती हैं, अत्यंत तुच्छ होती हैं। इसलिए हम अपना तादात्म्य किसी-न-किसी हस्ती से कर लेना चाहते हैं। यदि ईश्वर नहीं, तो यह फिर राज्य हो सकता है, और राज्य के अंतर्गत पूरा भारतवर्ष या सारी दुनिया हो सकती है, सरकार, शासन करने वाले लोग या समाज हो सकता है। और यदि इनमें से वह कुछ न हो तो कोई बहुत दूर कल्पना का आदर्श-लोक हो सकता है, कोई अद्भुत समाज हो सकता है जिसे हम बनाने जा रहे हैं, और उसे बनाने के लिए आप अनेक मनुष्यों का संहार करते हैं, पर वह आपके लिए चिंता का कारण नहीं होता। यदि आप इनमें से किसी भी बात पर विश्वास नहीं करते, तो आप सुख-सुविधा और आमोद-प्रमोद भरा जीवन बिताना चाहते हैं और भौतिक वस्तुओं में अपने आपको भुला देते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति को भौतिकतावादी कहा जाता है, और जो व्यक्ति अपने आपको आध्यात्मिक जगत में भुला देता है उसे आध्यात्मिक कहा जाता है। दोनों का लक्ष्य अपने आपको भुलाना ही होता है—उनमें से एक सिनेमा में, दूसरा ग्रंथों में, कर्मकांडों में, नदी के किनारे बैठकर ध्यान करने में, त्याग में अपने को भुलाने की चेष्टा करता है—ताकि उसका बोझ हल्का हो जाए, वह अपने को किसी कार्य में खो सके, किसी लक्ष्य की उपासना में स्वयं को डुबो सके।

स्वयं को बहुत छोटा अनुभव करने के कारण मनुष्य अपने आपको किसी तरह से खो देना चाहता है।

small. The self may not be small to you when you are young. But, as you grow older, you will see how little substance there is in it, how little value it has; it is like a shadow, with few qualities, full of struggles, pains, sorrows, and that is all. So, one soon gets bored with it and pursues something else in order to forget oneself. That is what all of us are doing. The rich want to forget themselves in night clubs, in amusements, in cars, in travelling. The clever ones want to forget themselves, so they begin to invent, to have extraordinary beliefs. The stupid ones want to forget themselves, and so they follow people, they have gurus who tell them what to do. The ambitious ones also want to forget themselves in doing something. So, all of us, as we mature, as we grow older, want to forget ourselves, and so we try to find something greater with which to be identified.

When we try to forget ourselves through something, through the state, through God, through a belief, through a guru; through action, then it creates illusions, it creates a false thing. When I forget myself through an idea, then the idea becomes important because I am forgetting myself through it. The ideal, being an invention of the mind, can also create illusions. So, I multiply illusions. These illusions, superstitions, beliefs, are what we call religion, and many books have been written about it—not how to dispel illusion, but how to arrange illusion in order to philosophize. But that is not religion, surely. Religion is not beliefs and dogmas, rituals and puja, putting on a sacred thread, muttering some words, however ancient they are. All those

जब आप कम उम्र के होते हैं तब आपको अपना आप छोटा प्रतीत नहीं होता होगा। परंतु जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं, आपकी समझ में आने लगता है कि इसकी सार्थकता कितनी कम है, यह कितना मूल्यहीन है; यह एक छाया भर है जिसमें थोड़े से गुण हैं, यह संघर्षों से भरा है, पीड़ाओं और विषादों से परिपूर्ण है। इसलिए, मनुष्य जल्दी ही इससे ऊब जाता है और किसी ऐसी चीज़ के पीछे भागता है जिसमें अपने को विस्मृत कर सके। हम सब यही कर रहे हैं। जिनके पास बहुत धन है वे लोग नाइट-क्लबों में, मनोरंजन के अनेक साधनों में, कारों और घूमने-फिरने में अपने आपको भुलाना चाहते हैं। जो थोड़े होशियार हैं वे भी अपने को भूलना चाहते हैं इसलिए वे असाधारण मान्यताओं की रचना कर लेते हैं और उन पर विश्वास रखने लगते हैं। बुद्धिहीन लोग भी स्वयं को भूलना चाहते हैं और इसलिए वे किसी के अनुयायी बन जाते हैं, किसी को गुरु बना लेते हैं जो उन्हें बताते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए। महत्वाकांक्षी व्यक्ति भी किसी काम में डूबकर खुद को भुला देना चाहते हैं। इस प्रकार हम सभी लोग जब परिपक्व हो जाते हैं, जब बड़े हो जाते हैं, तो खुद को भुलाना चाहते हैं, और इसलिए हम अपने से बड़ा कुछ ऐसा पा लेने का प्रयास करने लगते हैं जिससे हम एकाकार हो सकें।

जब हम किसी चीज़ के माध्यम से, राज्य, ईश्वर, गुरु या किसी कर्म आदि के माध्यम से अपने आपको भुलाने की चेष्टा करते हैं तो भ्रांतियां उत्पन्न हो जाती हैं, भ्रम पैदा हो जाते हैं। जब मैं किसी धारणा के माध्यम से अपने को भुलाता हूं तो वह धारणा मेरे लिए अहम बन जाती है। कोई आदर्श भी, जो कि मन का ही आविष्कार होता है, भ्रांति पैदा कर सकता है। इस प्रकार मैं भ्रांतियों को कई गुना बढ़ा लेता हूं। इन भ्रांतियों, अंधविश्वासों, आस्थाओं आदि को हम धर्म कहते हैं और इस बारे में अनेकों पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं—भ्रांतियों को मिटाने के बारे में नहीं, बल्कि इस बारे में कि भ्रांतियों को क्रमबद्ध करके कोई विचार-प्रणाली कैसे बनाई जाए। लेकिन निश्चित तौर पर वह धर्म नहीं है। विश्वास और रूढ़ियां, कर्मकांड और पूजा, जनेऊ आदि धारण करना, कुछ विशिष्ट शब्दों को बुदबुदाते रहना, फिर वे चाहे कितने पुरातन हों, धर्म नहीं है। वे सारी पद्धतियां किसी भ्रांति के माध्यम से अपने आप से पलायन करने का एक तरीका होती हैं। इस प्रकार का पलायन जिसे हम धर्म कहते हैं,

Chapter 15

methods are a way of escaping from yourself through some kind of illusion. The escape which we call religion is not religion. Religion is something totally different, and the mystery of it is to find that which is not the mere invention of the mind.

So, we have to find out what is real religion, the true religion which is not merely an invention of the mind; it does not matter whether that invention is of Shankara or of anybody else, all such invention is still just a theory. Religion is a state of being which each one of us must find. That state of being cannot be understood, it cannot come into being if we do not know how the mind creates illusions through its various subtle desires. As I said the other day, the mind is not just a superficial activity. Ganga is not just what we see on the surface, Ganga is the whole river from the beginning to the end, from where it starts till it goes to the sea, and it would be foolish to think that Ganga is just the water on the top. Similarly, we are very, very complex entities and the inventions, the ideas, the theories, the superstitions, the rituals, the repetitions, the mantras, those are all just on the top. We have to go through and push all that aside—all of it, not just one or two ideas, not one or two beliefs or rituals that we do not like. That is very arduous, very difficult, because most of us are afraid—afraid of what society, friends, parents will say. But if one truly wants to find out what is reality, God, one must go beyond all that, push all that aside. You can only push it aside if you understand and so go beyond.

So, religion is something entirely different from the beliefs in which

धर्म नहीं है। धर्म इससे पूर्णतः भिन्न होता है, और इसका रहस्य उस वस्तु का पता लगाने में है जो मन का आविष्कार नहीं है।

इसलिए हमें यह खोजना होगा कि वास्तविक धर्म क्या है, धर्म का वह यथार्थ स्वरूप क्या है जो मन की कल्पना मात्र नहीं है। इसका महत्त्व नहीं है कि वह कल्पना शंकर के द्वारा स्थापित की गयी है या किसी अन्य के द्वारा, ऐसी सभी स्थापनाएं केवल सिद्धांत ही होती हैं। धर्म हमारे होने की अस्तित्व की एक ऐसी दशा है जिसे हममें से प्रत्येक को अनुभव करना चाहिए। होने की उस दशा को तब तक नहीं समझा जा सकता, वह तब तक सामने नहीं आती जब तक हम यह नहीं जान लेते कि मन विभिन्न सूक्ष्म इच्छाओं के माध्यम से किस तरह भ्रान्तियां निर्मित कर लेता है। जैसा कि मैंने उस दिन कहा था, मन केवल सतह पर हो रही गतिविधि भर नहीं होता। गंगा केवल उतनी ही नहीं है जो वह सतह पर दिखाई देती है, गंगा आदि से लेकर अंत तक की संपूर्ण नदी है, जहां से यह प्रारंभ होती है और जहां यह सागर में मिलती है वह संपूर्ण नदी गंगा है, और यह विचार करना कोरी मूर्खता होगा कि गंगा केवल शिखर पर स्थित नदी है। इसी तरह से, हम बहुत, बहुत जटिल हस्तियां हैं, और मन की कल्पनाएं, धारणाएं, सिद्धांत, अंधविश्वास, कर्मकांड, दोहराव, मंत्र आदि सब सतह तक ही रहते हैं। हमें उससे पार जाना होगा और उस सबको एक तरफ रख देना होगा—उन सभी को, केवल एक-दो धारणाओं को ही नहीं, एक-दो विश्वासों या कर्मकांडों को ही नहीं, केवल उन्हें ही नहीं जो हमें पसंद नहीं। यह अत्यंत श्रमसाध्य, कठिन काम है क्योंकि ज्यादातर लोग भयग्रस्त रहते हैं—इस बात से डरे रहते हैं कि समाज, मित्र लोग, अभिभावक क्या कहेंगे। परंतु वास्तविकता, ईश्वर आदि क्या है, इसे यदि कोई सचमुच जानना चाहता है तो उसे इन सब बातों से ऊपर उठना होगा, इन सबको एक तरफ कर देना होगा। आप इन्हें तभी एक तरफ कर सकते हैं जब इन्हें अच्छी तरह समझ लें, इनसे परे जा पाएं।

अतः जिन विश्वासों के बीच रहते हुए हम पले-बढ़े हैं, धर्म उनसे सर्वथा भिन्न चीज़ है। परंतु आप

we have been brought up. But, you see, very few of us are free from fear, and it is fear that prevents the discovery of what is God. When we have fear, we become very insensitive. After all, when we look at a tree or a beautiful cloud or a beggar or a woman in tears, or when we see something beautiful, the love of that thing, the love of it for its own sake, is the beginning of real religion. But we do not live that way, we live in order to get something. I love my country because it is my country; this love of my country is a very subtle form of loving myself. But if you can love a tree, an animal, a human being—not for what they will give you but just to love, without asking a thing in return—that is the beginning of religion. You can know that love only when there is no fear. When the mind is no longer afraid, then it can go beyond its own imaginations, its own projections, its own ideas.

So, religion is something which is not an invention of the mind. It is a state of being in which the mind is not inventing as it does now because it functions in fear, in desire, in success, in ambition, in various forms of activities. Only when the mind has understood the whole working of itself is there then a possibility of it being quiet, being very still. That stillness is not the peace of death; that stillness is very active, very alert, very watchful, intensive, passive. Then alone, one can find out; then alone that which we call God, truth, or whatever name you like comes into being. But one cannot go after it. One has to understand the trees, the love of the trees, the love of the beautiful; one has to understand sorrow, joy, and all the struggles of

देखते हैं कि हममें से इने-गिने लोग ही भय से मुक्त होते हैं, और ईश्वर क्या है इसका पता लगाने से भय ही हमें रोकता है। जब हममें भय होता है, हम बहुत असंवेदनशील हो जाते हैं। क्योंकि जब भी हम किसी वृक्ष को या किसी सुंदर बादल को देखते हैं, जब भी हम किसी भिखारी या आंसू बहा रही किसी नारी को देखते हैं, अथवा जब भी हम किसी सुंदर चीज़ की ओर देखते हैं, तो उस चीज़ से हमारा प्रेम, बिना किसी प्रयोजन के सिर्फ उसके लिए उससे हमारा प्रेम ही तो आखिर सच्चे धर्म की शुरुआत है। पर जीवन को हम उस ढंग से नहीं जीते, हम कुछ पाने की आशा रखकर जिया करते हैं। मैं अपने देश से इसलिए प्यार करता हूँ क्योंकि यह मेरा देश है, अपने देश से प्रेम करना अपने आपसे प्रेम करने का ही एक अत्यंत सूक्ष्म रूप है। परंतु यदि आप किसी वृक्ष से, किसी पशु से, किसी मनुष्य से—उससे बदले में कुछ पाने की आशा रखे बिना ही प्रेम कर सकें, सिर्फ प्रेम करने के लिए ही प्रेम करें और बदले में कुछ न मांगें, तो यही धर्म की शुरुआत है। उस प्रेम को आप केवल तभी जान पाते हैं जब आपमें भय नहीं होता। जब मन भय से मुक्त हो जाता है तो वह अपने ही प्रक्षेपणों से, अपनी ही कल्पनाओं से, अपनी ही धारणाओं से परे जा सकता है।

अतः धर्म कोई मन द्वारा ईजाद की हुई चीज़ नहीं है। इस समय मन जिस प्रकार से भय, कामना, सफलता, महत्वाकांक्षा आदि विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में लगा है, यह अनेक काल्पनिक प्रतिमाएं खड़ी करता रहता है, परंतु धर्म तो होने की वह दशा है जिसमें मन ऐसी कोई प्रतिमा नहीं रचता। जब मन स्वयं की संपूर्ण कार्यप्रणाली को भलीभांति समझ लेता है केवल तब ही इसके मौन हो जाने की, अत्यंत निश्चल हो जाने की संभावना होती है। वह निश्चलता मृत्यु की शांति नहीं होती, वह मौन अत्यंत क्रियाशील, अत्यंत सतर्क, अत्यंत सजग, प्रखर और स्थिर होता है। तब ही वस्तुतः खोज संभव हो पाती है, केवल उसी दशा में जिसे हम ईश्वर, सत्य आदि कहते हैं, या जो भी नाम आप उसे देना चाहें, वह प्रकट होता है। किंतु आप उसका पीछाकर उसे कभी नहीं पा सकते। इसके लिए हमें वृक्षों को समझना होगा, वृक्षों से प्रेम करना क्या है, सौंदर्य से प्रेम करना क्या है, यह समझना होगा; हमें दुख को, खुशी को और मानव अस्तित्व के सारे संघर्ष को समझना होगा। तब कोई

Chapter 15

human existence. Then one can go beyond all that; then the mind is really a cessation of the self, the 'me'. Only then can that which we all worship, that which we are all seeking or trying to find, come into being.

Question: What is emotion? Is it good or bad since human beings have it?

Krishnamurti: Don't you know what emotions are? When somebody pan ches you; s you cry; when somebody dies, you cry. When you see something beautiful, you laugh. It is a form of sensation; it is not right or wrong.

You see, we always like to think in terms of good or bad—'this is right,' 'this is wrong,' 'this is bad,' 'this is good'—and we think we have solved the whole problem of existence by calling everything good or bad. We want to suppress an emotion in order not to feel because that emotion creates pain, so we say it is bad. But if it is a pleasurable emotion, we do not want to suppress it, we want to keep it, have more and more of it.

So, emotion is a thing to be understood, to be watched over, to be cared for, so that you will understand it, so that you will not say it is good or bad. It is the instinct, or rather the conditioning of the mind, which makes us call anything good or bad, as though you have really understood the little child if you call him good or call him naughty. If you want to understand the child, you study him, you watch him when he is playing, when he is crying, when he is sleeping; you do not condemn him. But you see, condemning

उस सबसे परे जा सकेगा, तब सचमुच स्व का, 'मैं' का अंत होता है। केवल उसी दशा में वह प्रकट होता है जिसकी हम सब पूजा करते हैं, जिसे हम सब खोज रहे हैं या जिसे जानने-पाने का हम प्रयत्न कर रहे हैं।

प्रश्न : भावावेग क्या है? चूंकि मनुष्य में भावावेग होते हैं, उनका होना अच्छा है या बुरा है?

कृष्णमूर्ति : क्या आप नहीं जानते कि भावावेग क्या हैं? जब कोई आपको घूसा मारता है तो आप रोने लगते हैं, जब कोई मर जाता है तो आप रोने लगते हैं। जब आप कोई सुंदर चीज़ देखते हैं तो खुश होते हैं। यह संवेदन का एक रूप है, यह सही अथवा गलत नहीं होता।

देखिए, हम किसी भी चीज़ को अच्छे या बुरे की तरह ही देखा करते हैं--'यह सही है', 'यह गलत है', 'यह खराब है', 'यह अच्छा है'--और हमें लगता है कि हर वस्तु को अच्छा या बुरा कह देने भर से हमने अपने जीवन की सारी समस्या को हल कर दिया। जब किसी भावावेग के कारण हमें पीड़ा होती है तो हम उसे दबा डालते हैं ताकि वह हमें महसूस ही न हो, और उसे हम बुरा कहते हैं। परंतु यदि वह एक सुखद भावावेग हो तो हम उसे दबाते नहीं बल्कि उसे बनाए रखना चाहते हैं, उसे बार-बार अनुभव करना चाहते हैं।

इसलिए हमें भावावेग को समझना चाहिए, उसकी निगरानी करनी चाहिए, उसकी देखभाल करनी चाहिए ताकि आप उसे पूरी तरह समझ सकें, ताकि आप यह न कहें कि यह अच्छा है या बुरा है। यह तो हमारी प्रवृत्ति अथवा मन की संस्कारबद्धता ही होती है जिसके कारण हम किसी भी बात को अच्छा या बुरा कहते हैं, इसी प्रवृत्ति के कारण आप किसी छोटे से शिशु को अच्छा अथवा शरारती कह देते हैं मानो ऐसा करके आप उसे सचमुच समझ गए हों। यदि आप बच्चे को समझना ही चाहते हैं तो आप उसका अध्ययन करें, जब वह खेल रहा हो, जब वह रो रहा हो, जब वह सो रहा हो, उस समय उसे ध्यान से देखें, आप उसकी निंदा न करें। परंतु किसी चीज़ की, या किसी व्यक्ति की, या किसी विशिष्ट बात की निंदा करना कितना आसान होता

Chapter 15

something or somebody or some quality is so easy. You say, 'that is bad,' and there it ends, but to understand the thing requires a great deal of care, patience, attention; that means watchfulness.

है। आप कहते हैं, 'यह खराब है' और बात वहीं खत्म कर देते हैं, किंतु किसी चीज़ को समझने के लिए बहुत सावधानी की, धैर्य की, अवधान की अर्थात् जागरूकता की आवश्यकता होती है।